नव भारत
। संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी । प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी ।

अश्लील सामग्री पर रोक का साहसिक कदम

भारत सरकार द्वारा 25 ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय सिर्फ एक प्रशासनिक कार्रवाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों की रक्षा की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है. यह स्पष्ट संदेश देता है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर अश्लीलता और पोर्नोग्राफी को बढ़ावा देना किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं है.

डिजिटल युग में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने भारतीय मनोरंजन जगत को नई दिशा दी है. परंतु कुछ प्लेटफॉर्म्स ने इस स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर अश्लील, आपत्तिजनक और यौन उत्तेजक सामग्री परोसने का धंधा बना लिया. इससे न केवल भारतीय संस्कृति को चोट पहुंची, बल्कि युवा पीढ़ी के नैतिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा. सरकार का मानना है कि ये प्लेटफॉर्म्स बार-बार चेतावनी के बावजूद अपनी प्रवृत्ति से नहीं हटे, जिससे कठोर कार्रवाई अनिवार्य हो गई.

इस प्रतिबंध के कानूनी आधार बेहद मजबूत हैं. सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 67 और 67 अश्लील और यौन सामग्री के प्रसार पर स्पष्ट रोक लगाती हैं. साथ ही, आईटी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 का उल्लंघन भी इन प्लेटफॉर्म्स द्वारा किया गया था. यह कानून सिर्फ कागज पर नहीं, बल्कि लागू करने का साहसिक उदाहरण सरकार ने पेश किया है.

मनोरंजन का उद्देश्य संस्कृति को समृद्ध करना है, न कि समाज में विकृति फैलाना. बच्चों और किशोरों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म नई शिक्षा और ज्ञान का स्रोत बन सकते हैं, लेकिन जब यह माध्यम अश्लीलता का गढ़ बन जाए, तो राष्ट्रहित में हस्तक्षेप अनिवार्य हो जाता है. यह कार्रवाई उन परिवारों की भी आवाज है जो लंबे समय से इन प्लेटफॉर्म्स की बेहूदा सामग्री को लेकर चिंतित थे. कुछ लोग तर्क देंगे कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रहार है. लेकिन यह भूलना नहीं चाहिए कि किसी भी लोकतंत्र में स्वतंत्रता का दायरा सामाजिक और कानूनी मर्यादाओं से बंधा होता है.

भारतीय संविधान में भी स्वतंत्रता के साथ-साथ जिम्मेदारी का प्रावधान है.यह कदम डिजिटल स्पेस को साफ-सुथरा बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा. अब आवश्यकता है कि सरकार एक सशक्त डिजिटल कंटेंट रेगुलेशन फ्रेमवर्क विकसित करे, ताकि भविष्य में इस तरह की स्थिति न उत्पन्न हो. साथ ही, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स को पारदर्शिता और जिम्मेदारी के साथ गुणवत्तापूर्ण सामग्री प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए.कुल मिलाकर भारत सरकार का यह निर्णय केवल अश्लीलता के खिलाफ कदम नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की नैतिक रीढ़ को मजबूत करने का प्रयास है. डिजिटल स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं कि समाज के मूल्यों को कुचल दिया जाए. यह कार्रवाई अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के लिए एक सख्त चेतावनी है कि भारतीय संस्कृति और कानून से खिलवाड़ करने वालों के लिए कोई छूट नहीं है.

दरअसल, सरकार का मानना है कि ये प्लेटफॉर्म मनोरंजन की आड़ में ऐसी सामग्री दिखा रहे थे जो भारतीय कानून और सामाजिक मर्यादाओं के खिलाफ है, और बच्चों तथा भारतीय संस्कृति के लिए ठीक नहीं है. यह ध्यान रखना होगा कि सर्वोच्च न्यायालय ने भी समय-समय पर सरकार को चाइल्ड पॉर्नोग्राफी और सोशल मीडिया तथा ओटीटी पर दिखाई जा रही अश्लील सामग्री पर रोक लगाने की सलाह दी है. जाहिर है सरकार का यह कदम प्रशंसा योग्य है.

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस 28 जुलाई पर विशेष

सात अरब आबादी करें आवश्यकता सीमित

डॉ नीलमेघ चतुर्वेदी

> वसुंधरा का सौंदर्य जैव विविधता में निहित है. ससि, जल, पावक, गगन, समीरा जैसे पंच भूत न केवल मानव शरीर को बनाते हैं, बल्कि प्रत्येक जंतु और वनस्पति के जीवन आधार हैं. जनसंख्या विस्फोट के चलते प्राकृतिक संसाधन दबाव में है. इनसे न केवल मनुष्य जाति प्रतिकूल रूप से प्रभावित हैं, अपितु जैव विविधता भारी दबाव में है. इसका प्रभाव खान-पान और आजीविका पर है. जंगली इमली, आंबा हल्दी, टेमरु, फालसा और करौंदे जैसी लघु वनोपजों की उपलब्धता घटी है, वहीं सूस और कछुओं की कुछ प्रजातियों की तस्करी ने इन्हें विलुप्तप्राय- श्रेणी में ला खड़ा किया है. इससे जैव विविधता घटी है, वहीं प्रकृति में भोजन श्रृंखला भी गड़बड़ हुई है. प्राकृतिक व्यवस्था सुचारू बनाए रखने के लिए सभी घटकों का संरक्षण समय की मांग है.

आधुनिक विश्व के इतिहास में पर्यावरण और प्रकृति संबंधी दिवसों की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र की सक्रियता के साथ मानी जाती है, किंतु भारत वर्ष की संस्कृति सभ्यता के विकास के साथ ही प्रकृति के सामीप्य, आदर और श्रद्धा से जुड़ी है. संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 1972 में स्टॉकहोम कांफ्रेंस में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाने के निर्णय पर स्वीकृति प्रदान की. कारण था, अरबों की आबादी में हर सपने का वसुंधरा के आंचल पर बढ़ता दबाव और इसके दुष्प्रभावों को नियंत्रित करना. 28 जुलाई 1972 से यह दिवस विश्व स्तर पर मनाए जाने लगा. हमारे यहां पौराणिक काल से हरियाली तीज, हरियाली अमावस्या, आंवला नवमी, वट सावित्री पूर्णिमां और निर्जला एकादशी जैसे त्यौहारों की परंपरा है. पर्वत और समुद्र को हमने देवता तुल्य माना है. नदी-तालाब पूजन की परंपरा का निर्वहन किया है. गंगा जीवनदायिनी है. पुण्यसलिला नर्मदा के दर्शन से और मोक्षदायिनी शिप्रा के स्मरण से मोक्ष की प्राप्ति की बात स्कंद पुराण के अवंतिका खंड में है. एक पौधा लगा, उसे वृक्ष के रूप में तैयार करना, सौ पुत्रों को पालने के समान बताया गया है. नवजात का बाहरी दुनिया से परिचय एक तरह से जल देव, चाहे कुए पर या तालाब पर, पूजन से होता है. शहरों में तो नल पर ही प्रतीक स्वरूप जलवाय पूजन की परंपरा कायम है. विश्व ने भी इन परंपराओं को माना. 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस, 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस और 30 मार्च को %जीरो वेस्ट डे% मनाया जाता है.

28 जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाने का अर्थ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से जुड़ा है. आज प्राकृतिक संसाधन सबसे अधिक दबाव में है. इतना दबाव मानव सभ्यता के इतिहास में पहले कभी नहीं देखा गया. इसलिए यह दिवस हमें प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा देता है. संसाधनों का न्यायोचित उपयोग करें अत्यधिक दोहन नहीं. हरित सोचें, हरित बनें, मिट्टी, पेड़-पौधों हवा, पानी, जंतुओं की देखभाल करें. वनों का संरक्षण करें और बिगड़े पारिस्थितिकी तंत्र को सुधारने में समय दें. यह दिवस इस विचार को अधिमान्यता देने का है, जिसमें स्वस्थ्य वसुंधरा को समृद्धि की नींव माना गया है. यह दिवस मानवता और प्रकृति के बीच टिकाऊ और मजबूत संबंधों का पैरोकार है. व्यक्तियों और समुदायों को प्रकृति से मजबूत और टिकाऊ संबंध विकसित करने की प्रेरणा देने का दिवस है.

इंसान की लालची प्रवृत्ति के चलते जलवायु परिवर्तन के गंभीर परिणाम देखने में आ रहे हैं. हाल ही में सावन के सेहरे के स्थान पर अश्विन मास जैसी तेज धूप अनुभव हुई है. पोलीथीन थैलियों ने सीवरेज प्रणाली को बाधित किया है. वनों की कटाई के चलते पृथ्वी के प्रति बादलों का आकर्षण कुछ घटता नजर आता है. बचपन की न लगातार की सात दिनों की झड़ी हैं और न ही खुरासन इमली के बीजों का अंकुरण. यह तो एक उदाहरण है. इंटरनेशनल यूनियन ऑफ कंजरवेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन-स्थापना वर्ष 1948) ने उन लाखों प्रजातियों की सूची रेड बुक में प्रकाशित की है, जो संकट ग्रस्त हैं. इन प्रजातियों को हमारे पुरखों ने लाखों सालों से संरक्षित रखा था. अब हमारी पीढ़ी की ओर संरक्षण की अपेक्षा में कातर दृष्टि से देख रही हैं. हमारा पारिस्थितिकी तंत्र स्वस्थ है तो जैव विविधता और इनसे जुड़े रहे आजीवीकोपार्जन के अवसर भी सुरक्षित हैं.

प्रकृति संरक्षण के लिए जैव ईंधन जैसे इथेनॉल, सौर ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन और कंप्रेस्ड बायोगैस के विकल्पों को अत्यधिक से अत्यधिक उपयोग में लाना समय की माँग है. नीति शास्त्र अनुसार %इथिकल बिजनेस% प्रक्रियाओं को आत्मसात करना जरूरी हो चला है. आज माँ वसुंधरा की गोद में लगभग 7 अरब की जनसंख्या है. जंतु और वनस्पति संपदा अलग. प्रत्येक इंसान का अपना सपना है. एक वसुंधरा और प्राकृतिक संसाधनों जैसे हवा, पानी, मिट्टी पर बढ़ता दबाव! हर किसी का सपना कैसे पूरा हो, विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस प्रसंग पर यह विषय संपूर्ण मानव जाति के समक्ष विचारणीय हो, हर व्यक्ति अपने सपने को सीमित करे, संसाधनों के न्यायिक उपयोग पर बल दे तभी प्रकृति संरक्षण दिवस सार्थक रहेगा.

विश्व हेपेटाइटिस दिवस - 28 जुलाई पर विशेष

हेपेटाइटिस व लीवर की बीमारियों से कैसे बचें और क्या करें हम

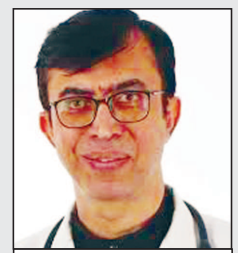
डॉ. संजय कुमार
पेट व लिवर रोग विशेषज्ञ

हेपेटाइटिस दिवस पूरे विश्व में मनाया जाता है. ताकि ये हमें याद दिलाता रहे की इस घातक बीमारी से हमे बचना है सारी सावधानी रखना है और इस धरती को हेपेटाइटिस मुक्त बनाना है, पर क्या यह संभव है? आइये पहले कुछ आंकड़े समझ लेते हैं.

हेपेटाइटिस यानी होता है लीवर की सूजन जो आमतौर पर वायरस इन्फेक्शन से होती है हालाँकि इसके अन्य कारण भी है जैसे शराब, कई किस्म की दवाइयां (एलोपैथी, होमियोपैथी या आयुर्वेदिक), कुछ अनुवांशिक बीमारियाँ या फिर Autoimmune Disease अगर हम अगर हम वायरस की बात करें तो पांच किस्म के वायरस होते हैं A,B,C, D & E इसमें से B & C की ये खासियत है कि यह शरीर में घर बना लेते हैं यानी Chronic Phase में चले जाते हैं और धीरे-धीरे लीवर को खराब कर देते है सिरोसिस या लीवरकैंसर में परिवर्तित हो जाते हैं.

किसी व्यक्ति को कैसे पता चलेगा कि उसे हेपेटाइटिस हो गया है? इसका मुख्य लक्षण है पीलिया, भूख न लगना, कमजोरी, उल्टी आना, हल्का बुखार इत्यादि. पर खास बात यह है कि हर पेशेंट में लक्षण नहीं होते, बहुत से लोग Asymptomatic होते हैं इन्हें सिर्फ टेस्ट के जरिए पकड़ा जा सकता है.

हेपेटाइटिस बी पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि विश्व के विकसित देशों में इस पर काबू पाया जा चुका है और हम अभी काफी पीछे हैं पहले यह समझ लेते हैं कि हेपेटाइटिस बी फैलता कैसे है यह होता है खून चढ़ाने से, सर्जरी के दौरान, इंजेक्शन, सिरिंज से या असुरक्षित यौन संबंधों से. पर एक सबसे महत्वपूर्ण जरिया है माँ से बच्चों को होने वाला इन्फेक्शन. आज भी क्रॉनिक हेपेटाइटिस बी के ज्यादातर मरीजों को यह बीमारी मां के पेट से आती है यानी वर्टिकल ट्रांसमिशन और यह सब symptomatic होते हैं पर इनफेक्टिव होते हैं यानी यह संपर्क में आने वाली किसी भी व्यक्ति को संक्रमित कर सकते हैं

इस समय विश्व में लगभग 40 करोड लोगों को हेपेटाइटिस बी है और इनमें से 95प्र.श. को कोई लक्षण नहीं इस बीमारी का सबसे बड़ा चैलेंज यही है इसलिए इस वर्ष World Hepatitis Day पर स्लोगन रखा गया है "Hepatitis let's break it down" यानी हेपेटाइटिस से बचाव का इलाज के लिए ये सारे सामाजिक, प्रशासनिक व आर्थिक बंधनों को तोड़े और हेपेटाइटिस की जांच करवायें और शुरूआती स्टेज में इलाज करें, और जिनको नहीं है उनको टीके लगवाएं. ये बहुत ही अच्छा स्लोगन है क्योंकि हेपेटाइटिस इंतजार नहीं करता.........आप भी ना करें.

लीवरकी बीमारियों की पकड़ आसान है, ब्लड ब्लड टेस्ट जैसे LFT और सोनोग्राफी ही काफी है. इसके बाद अगर शंका हो तो Hepatitis Markers और लीवरडैमेज की शंका हो तो Fibroscan और एंडोस्कोपी. Fibroscan एक बेहद कारगर जांच है जिसमें 10 मिनट में लीवर डैमेज का पता लग जाता है और एंडोस्कोपी इन मरीजों के खून की उल्टी रोकने का अति उपयोगी साधन है. हेपेटाइटिस से बचने का मूल मंत्र है वैक्सीनेशन, हेपेटाइटिस A & B के लिए वैक्सीनेट कराएँ, हेपेटाइटिस A के लिए स्वच्छ खाद्य पदार्थ व पानी का इस्तेमाल करें, Hand Hygiene का विशेष ध्यान रखें हेपेटाइटिस B एंड C के लिए Safe Medical Practices रखें और असुरक्षित यौन संबंधों से बचें.

ऐसे कारण जो लीवर को खराब कर सकते हैं

अब देखते हैं कि और क्या अन्य ऐसे कारण है जो लीवर को खराब कर सकते हैं जो इसमें मुख्य है शराब. इसका सेवन सीमित मात्रा में ही हो यानी सप्ताह में दो दिन से ज्यादा नहीं और 60 ml से ज्यादा नहीं. आज भी विश्व में लगभग 40प्र.श. सिरोसिस के केस शराब के कारण है. परंतु ज्यादा चिंता अब है NAFLD की! यानी वो बीमारी जिसमें व्यक्ति ने कभी शराब नहीं पी पर वह व्यायाम नहीं करता उसका वजन ज्यादा है या वो डायबिटिक है. इनको ठीक वैसे ही बीमारी होती जो कि शराब पीने वालों को होती है. इसका नया नाम MASLD है मतलब लीवर पर चर्बी जमा होती जाती है पर रिजल्ट वही है यानी सिरोसिस या लीवर डैमेज तो इससे बचने के लिए नियमित रूप से 45 मिनट या एक घंटा व्यायाम करें, अपना वजन बढ़ने न दें, फास्ट फूड व तला या अधिक मीठा ना खाएं और अगर डायबिटिक है तो शुगर कंट्रोल रखें HBAvc 7.0 के नीचे रखें इसके अलावा और बहुत सी सावधानियां आवश्यक है जैसे बिना डाक्टरी सलाह के अनावश्यक दवाओं का इस्तेमाल न करें, बहुत सी दवाएं Hepatotoxic होती है और उनके लगातार इस्तेमाल से लीवर खराब हो जाता है. कई आनुवंशिक बीमारियां होती है और कई Immunity Mediated Disease इनसे बचना तो मुमकिन नहीं पर इन सभी का अच्छा इलाज उपलब्ध है. इस सब के बाद भी अगर लीवर डैमेज हो जाए तो लीवर प्रत्यारोपण किया जा सकता है जो अपने आप में बेहद सफल तकनीक है और हमारे देश में सर्वथा उपलब्ध है.

गाजा में लोगों को भूखा मार रहा इजराइल

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की निष्ठुरता की वजह से गाजा में लोगों और खास तौर पर बच्चों के भूख से मरने की दर्दनाक घटनाएं हो रही हैं. गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार इजराइल हमास के बीच अक्टूबर 2023 में युद्ध शुरू होने के बाद से 55,000 लोगों की मौत हुई है. युद्ध के अलावा भुखमरी से भी मौत का सिलसिला जारी है. कम से कम 111 लोग भूख से मरे हैं जिनमें बड़ी तादाद बच्चों की है. पिछले सप्ताह ही 40 से ज्यादा की जान चली गई. फिलस्तीनी शरणार्थियों की मदद करनेवाली यूएन की एजेंसी के प्रमुख के अनुसार सहायता कर्मी और डाक्टर भी भूख से मरे हैं. गाजा के 20,00,000 लोग अकाल की विभीषिका भुगत रहे हैं. यूएन के अधिकारियों, ऑक्सफेम और एमनेस्टी जैसे मानवीय सहायता समूहों तथा निष्पक्ष विशेषज्ञों ने इजराइल सरकार पर आरोप लगाया है कि वह जानबूझकर गाजावासियों तक सहायता पहुंचने से रोक रही है. 109 सहायता एजेंसियों ने इस संबंध में संयुक्त पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं. इजराइल सहायता सामग्री को यह कहकर रोक रहा है कि यह हमास की ओर हस्तांतरित की जा रही है. यह आरोप लगाकर इजराइल ने यूएन द्वारा संचालित 400 सहायता केंद्रों को बंद करवा दिया. गोलाबारी और फायरिंग के बीच खंडहरों में अपने परिवार और बच्चों के लिए खाद्य सामग्री की खोज करनेवाले 1000 फिलस्तीनियों की हत्या कर दी गई. उनके सामने ऐसी स्थिति है कि या तो भूखे मर जाएं या खाद्य सामग्री की खोजते हुए गोली या बम धमाके का शिकार हो जाएं. इजराइल अंतरराष्ट्रीय कानून का सरासर उल्लंघन कर रहा है. जानबूझकर लोगों को भूखे मारना निर्दयता की पराकाष्ठा है. द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने भी वही किया था. चर्चिल के आदेश पर बंगाल का सारा अनाज जहाजों में लादकर ब्रिटिश फौजियों के लिए भेज दिया गया था. इससे बंगाल में लाखों लोग सड़कों पर तड़प-तड़प कर भूख से मर गए थे क्योंकि अनाज का एक दाना भी उपलब्ध नहीं था. वैसी ही क्रूरता इजराइली पीएम इस समय दिखा रहे हैं. यूके, आस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस सहित 28 देशों ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि गाजा में जीवनावश्यक मानवीय सहायता को रोकना अस्वीकार्य है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मध्य प्रदेश की पंचायत में घोटाला 120 रुपये रेट का लड्डू खा डाला

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, प मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल डिंडोरी जिले की अंडई ग्राम पंचायत में शासकीय आयोजन के बोगस बिल पास किए गए. इसमें 12 लड्डुओं का दाम 1,440 रुपए लगाया गया अर्थात 120 रुपए का एक लड्डू पड़ा. इस तरह निचले स्तर में भी काफी भ्रष्टाचार होता है.

हमने कहा, जहां तक लड्डू की बात है उसकी एसआईटी जांच की जा सकती है. पता लगाया जाए कि कहीं यह कानपुर से आया ठग्गू का लड्डू तो नहीं है. उस दुकान पर बोर्ड लगा है- ऐसा कोई सगा नहीं जिसको हमने ठगा नहीं! लड्डू रवे का था, बेसन को था, बूंदी का था या मोतीचूर का? इसके अलावा डिलीवरी लड्डु भी होते हैं जो खारिक, बादाम, किशमिश, काजू पिस्ता, गुड़ व गोंद से बनाए जाते हैं. चालाक नेताओं के दोनों हाथों में लड्डू होते हैं. राजनीति में कुछ नेताओं की स्थिति अपने खोटे कर्मों की वजह से आ बे लड्डू, जा बे लड्डू जैसी हो जाती है. उन्हें कभी भी पार्टी या सरकार में अंदर-बाहर किया जा सकता है. ऐसे नेताओं को

जोर का झटका लगता है. कुछ संभल जाते हैं, लेकिन ज्यादातर उखड़ जाते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, आप का ध्यान शायद पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड़ और महाराष्ट्र के कृषि मंत्री कोकाटे पर लगा है. इनकी बजाय मध्य प्रदेश की ग्राम पंचायत की घपलेबाजी पर गौर कीजिए. वहां आदिवासी परंपरा के नाम पर 3,700 रुपए की बीड़ी फूंक दी गई. पंचायत के सचिव प्रेमसिंह मरकाम ने यह बिल पास करते हुए कहा कि आदिवासी रीति-रिवाज के तहत बीड़ी-तंबाकू का उपयोग किया जाता है. पता नहीं, उन्होंने बीड़ी के साथ माचिस का खर्च जोड़ा या नहीं!

हमने कहा, देहाती और आदिवासी क्षेत्र में आमतौर पर बिजली नहीं रहती. इसलिए लोग रात में पैदल चलते समय बीड़ी जलाते हुए रास्ता तय करते हैं. इससे अंधेरे में सिग्नल मिल जाता है कि कोई आ रहा है. पंचायत स्तर में लड्डू या बीड़ी बिल, मीटिंग के खर्च के नाम पर भ्रष्टाचार होता है. ज्यादा बड़े घोटाले करने की उनकी हैसियत नहीं रहती. उसी पंचायत में बीजेपी जिला अध्यक्ष के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए 2500 रुपए टैक्सी भाड़ा भी हिसाब में बताया गया जबकि अध्यक्ष ने कहा कि वह उस पंचायत में गए ही नहीं थे. इस तरह निचले स्तर पर भी बेईमानी होती है. जहा तक बीड़ी के बिल की बात है, हमें फिल्म ओंकारा का गीत याद आ गया- बीड़ी जलाइले जिगर से पिया, जिगर मा बड़ी आग है!

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11975
-डॉ. सागर खादीवाला

1		2	■	3	4	■	5
	■	6				7	
8			■		■		■
	■	9	10		■	11	12
■	13			■	14		
15		■	16				
17		■	■		■		18
19	■	20					

ऊपर से नीचे
1. अर्धविकसित, गिरना, फुहार... हुआ 2. किसी घटना की जांच, अनुसंधान (उर्दू) 3. उजाड़ जगह, जंगल 4. नारी, हुए पत्ते आदि नाड़, गरदन 5. धीमा, सुस्त 7. तोरणद्वार पर डोरी से लटकाए हुए पत्ते आदि 10. नवीन, नया 12. गाडर नामक घास की सुगंधित जड़ जिसके गर्मियों में कमरे ठंडे करने के लिए पर्दे और टट्टियां बनती है 13. संवाद, खबर, हाल 14. जरूरी 15. स्याही रखने का छोटा पात्र 18. स्वर्ण, कंचन, नींद लेना

बाएं से दाएं
1. अखंडित, बिना टूटे चावल जो पूजा के काम में आते हैं 3. छोड़कर, बगैर 6. सशस्त्र, जो हथियार धारण किए हुए हो 8. मकान में हवा और प्रकाश के लिए बना हुआ छोटा झरोखा 9. विधि, राजनियम 11. नाखून 13. निरंतर, लगातार, सर्वदा 14. निवास स्थान, घर, मकान 15. श्वास की एक बीमारी 16. नटकला में प्रवीण व्यक्ति, श्रीकृष्ण 17. बोलने में तेज, व्यर्थ बकने वाला 19. गीला, आर्द्र 20. कड़कड़ शब्द करना या होना

Solution 11974

सं	दू	क	ची	■	सं	वि	दा
भा	■	वि	■	वा	चा	ल	■
व	■	रा	■	म	ल	य	■
ना	रा	ज	■	पं	क	■	त
■	ज	■	पो	थी	■	ह	ल
स	स्व	र	■	■	न	सी	ब
मा	■	की	म	ती	■	ना	गा
न	■	ब	ना	र	स	■	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में रूके कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में एवं प्रभाव में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि का सुख मिलेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों की शिक्षा में अचानक व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को लाभदायक अवसर प्राप्त होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को यश प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को निजीदायित्वों की पूर्ति होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हष्टपुष्ट सुन्दर एवं मिलनसार होगा. मित्रों की संख्या सीमित होगी. खेलों के प्रति रूचि रखने वाला न्यायप्रिय होगा. किसी विशेष विद्या का ज्ञाता होगा. माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

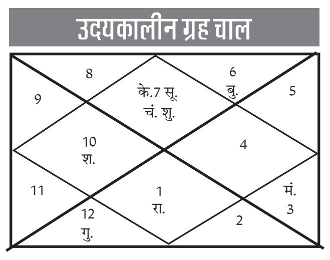

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2082 श्रावण शुक्ल चतुर्थी चन्द्रवासरे रात 11/43, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे रात 7/3, वरीयान योगे प्रात: 5/35 तदुपरि परिघ योगे रातअंत 5/8, वणिज करणे सू.उ. 5/22 सू.अ. 6/38, चन्द्रचार सिंह रात 1/26 से कन्या, पर्व- वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत, शु.रा. 5,7,8,11,12,3 अ.रा. 6,9,10,1,2,4 शुभांक- 7,9,3.

मेष- अपनों की मदद से मन को खुशी होगी. वैभव के सामान पर खर्च होगा. आपके बने बनाये कार्य अचानक रूक सकते हैं. महिला पक्ष की सलाह लेना उपयोगी रहेगी.

वृषभ- मामूली बात विवाद का रूप ले सकती है, जिद्दी रवैया रावणे बढ़ने में बाधक रहेगा. कार्यो में मनोंवाछित सफ्लता मिलेगी. रूका पैसा मिलेगा.

मिथुन- धार्मिक कार्यो में खर्च की संभावना, हालात में शांति बनाये रखें. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. लाभ के अवसर प्राप्त होंगे. साहस पराक्रम बना रहेगा.

कर्क- आय के नये श्रोत बढेंगे. जरूरतमंदों की मदद करके खुशी होगी. सामाजिक प्रतिष्ठा एवं लाभदायक कार्य बनेंगे. मनोरंजन के अवसर मिलेंगे.

सिंह- लेनदेन के मामले में आपका पक्ष कमजोर पड़ सकता है. जमकर जायजाद के कार्यो में विलंब होगा. अनावश्यक विवादों से बचने का प्रयास करें.

कन्या- किसी के प्रति ज्यादा झुकाव परिवार में कलह का कारण बन सकता है. कार्यो में आशातीत सफ्लता मिलेगी. महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे. दूर दराज की यात्रा होगी.

तुला- रोजगार को लेकर परेशानी होगी. भूमि भवन वाहन क्रय की संभावना है. परिश्रम की अधिकता रहेगी. साहस पराकम बना रहेगा. नियमितता बनी रहेगी.

वृश्चिक- भौतिक सुख साधन जुटाने में खर्च संभव है. अध्ययन में आ रही बाधा दूर होगी. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

धनु- बच्चों की पढाई कैरियर को लेकर चिन्ता होसकती है. अदालती मामले से दूर रहें. नौकरी में कार्यो की अधिकता रहेगी. व्यवसायिक क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी.

मकर- दौड़ धूप करके काम करवा लेंगे. जिम्मेदारी से बचने के चक्कर में अधिकरियों की नाराजगी झेलना पड़ेगी. प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. परिश्रम की अधिकता रहेगी.

कुम्भ- कार्य योजना में बदलाव संभव है. चापलूसों से सावधानी रखें. अधिकारियों से अनुबंध का लाभ प्राप्त होगा. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा.

मीन- आप पूरे उत्साह से कार्य करेंगे, जो लोग पहिले विरोध कर रहे थे, वे सहयोग के लिये रावणे आयेंगे. नवीन अनुबंधों का लाभ होगा.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल चतुर्थी को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत, बिनौला, सन, सरसों, अरंड़ी, मूॅगफली, घी, तेल, में, मंदी की चाल चलेगी, गेहूँ, जौ, चना, गुड, खांड, जायफल, हल्दी, में तेजी होगी. भाग्यांक 2489 है.

SUDOKU 7107

			4				3	
		6		2		4		
		8			5			
	3						7	
7				4				9
	9						5	
			2			1		
		1		7		6		
	5				3			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7106

7	8	5	4	2	9	6	3	1
3	6	4	1	5	7	8	9	2
9	2	1	6	3	8	7	4	5
6	5	3	2	8	4	9	1	7
1	7	2	3	9	6	4	5	8
4	9	8	7	1	5	2	6	3
2	4	7	5	6	1	3	8	9
5	3	9	8	4	2	1	7	6
8	1	6	9	7	3	5	2	4